टिप्पणी

24

सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी)

पिछले पाठ में आप मानव विकास की अवधारणा, इसके क्षेत्रीय स्वरूप और इसके सुधार की आवश्यकता से परिचित हुए। जैसा कि आप जानते हैं कि विकास की अवधारणा काफी हद तक मानव समाज की बेहतरी या उन्नति पर केंद्रित है लेकिन विकास के पैटर्न की विशेषता 'असमानता' है। उदाहरण के लिए, दुनिया के सभी देश उच्च आय, सामाजिक समानता और रहने योग्य वातावरण चाहते हैं। लेकिन दुर्भाग्य से, विकास का स्तर पर्यावरण के विकास के व्युत्क्रमानुपाती है। इसलिए, इस पाठ में, आप सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों (MDG) और सतत विकास लक्ष्यों (SDG) को भारत के विशेष संदर्भ में इसकी अवधारणा और महत्व को जानेंगे।

सीखने के प्रतिफल

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात् शिक्षार्थी:

- सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्यों और सतत विकास लक्ष्यों के बीच अंतर करता है;
- सतत विकास लक्ष्य की प्रमुख अवधारणाओं और महत्व का वर्णन करता है;
- सतत विकास लक्ष्यों और उनके विशिष्ट लक्ष्यों की व्याख्या करता है और
- भारतीय संदर्भ में स्थानिक विकास पर सतत विकास लक्ष्यों के प्रभाव को स्पष्ट करता है।

24.1 विकास लक्ष्यों की अवधारणा

जैसा कि आप जानते हैं, विकास एक बहुआयामी परिघटना है जो मानव-पर्यावरण की अंत: क्रियाओं का परिणाम है। विकास के लक्ष्य आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय पहलुओं की उन्नति के इर्द-गिर्द घूमते हैं। अलग-अलग लोगों के लिए उनकी आवश्यकताओं के आधार पर इसका अलग-अलग अर्थ होता है। उदाहरण के लिए, कुछ लोग उच्च आय चाहते हैं जबकि अन्य स्वच्छ वातावरण चाहते हैं।

टिप्पणी

प्राकृतिक संसाधन किसी राष्ट्र के आर्थिक विकास के लिए आधार प्रदान करते हैं। समृद्ध तकनीकी कौशल सहित समृद्ध भौतिक और मानव संसाधन वाले देश को विकसित माना जाता है। प्रारंभ में, मनुष्य ने उच्च आय को आर्थिक विकास की अवधारणा से जोड़ा लेकिन इसके परिणामस्वरूप सामाजिक असमानता और एक दोषपूर्ण पर्यावरण पैदा हुआ। विकास और पर्यावरण के बीच विपरीत संबंध होता है। विकास का स्तर जितना ऊंचा होगा, पर्यावरण की गुणवत्ता उतनी ही खराब होगी। पर्यावरणीय गिरावट मानव अस्तित्व और बायोटा के लिए सबसे बड़ा खतरा है।

जैसा कि पिछले पाठ में चर्चा की गई है कि आर्थिक विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मनुष्य अपने पर्यावरण को बदल रहा है। आर्थिक विकास का मुख्य पहलू प्रति व्यक्ति आय या जीडीपी है। उच्च से उच्च आर्थिक विकास प्राप्त करने के लिए मनुष्य तकनीकी उन्नति के साथ अपनी शारीरिक और मानसिक क्षमताओं का उपयोग करता रहा है और इसकी पर्यावरणीय शक्तियों का दोहन करता रहा है।

द्वितीय विश्व युद्ध से पहले विकासात्मक गतिविधियों का एकमात्र उद्देश्य आर्थिक विकास था, उसके बाद हमारा विकास का उद्देश्य सामाजिक और मानव विकास की ओर स्थानांतरित हो गया (तालिका 1)। अध्याय 23 में मानव विकास की अवधारणा पर चर्चा की गई है। मानव विकास को लोगों की पसंद को विस्तार देने की एक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है, अर्थात् एक स्वस्थ जीवन का आनंद लेना, ज्ञान प्राप्त करना, एक सभ्य जीवन स्तर प्राप्त करना और मानव कल्याण के लिए दीर्घकालीन दृष्टिकोण प्रदान करना। प्रति दिन मनुष्य कई तरीकों से पर्यावरण और इसकी गुणवत्ता को प्रभावित कर रहा है। उदाहरण के लिए, दिल्ली में प्रतिदिन लाखों टन कचरा पैदा हो रहा है, रासायनिक युक्त स्वास्थ्य के लिए हानिकारक पानी यमुना नदी में छोड़ा जा रहा है और बढ़ते वाहनों के प्रदूषण के कारण हवा भी दिन-ब-दिन अस्वस्थ होती जा रही है। दिल्ली, भारत का सबसे विकसित शहर होने के नाते, अस्थिर होता जा रहा है। दिल्ली सिर्फ एक उदाहरण है; दुनिया के सभी शहर एक जैसी पर्यावरणीय समस्याओं का सामना कर रहे हैं। पृथ्वी ग्रह को बचाने के लिए, 1963 में, राहेल कार्सन ने संयुक्त राज्य अमेरिका में एक पर्यावरण आंदोलन शुरू किया।

तालिका 24.1: आधुनिक युग में विकास

युग	**अनुसंधान और खोज**	**विकास लक्ष्य**
वाणिज्यवाद युग	औद्योगिक क्रांति	आर्थिक विकास
विश्व युद्ध I ओर II	सामाजिक-आर्थिक असमानता बढ़ी	
विश्व युद्ध II के बाद	संयुक्त राष्ट्र का गठन	सामाजिक (मानव) विकास
ब्रंटलैंड आयोग	सतत विकास	पर्यावरण का विकास

टिप्पणी

सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्य (MDGs)	संयुक्त राष्ट्र ने आठ विकास लक्ष्यों कि रूपरेखा बनाई।	आर्थिक और सामाजिक विकास
सतत विकास लक्ष्य (SDGs)	संयुक्त राष्ट्र ने एम.डी.जी. में नौ आर्थिक, विकास पर्यावरण लक्ष्यों को शामिल किया	आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरण विकास

वैश्विक विकास लक्ष्यों की पृष्ठभूमि

आपने एक प्रसिद्ध कहावत सुनी होगी कि 'रोम एक दिन में नहीं बना था' उसी तरह विकास लक्ष्यों की स्थापना भी एक दिन का काम नहीं था। इसकी शुरुआत मानव पर्यावरण पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के साथ हुई थी जो 50 साल पहले जून 1972 में स्टॉकहोम में आयोजित किया गया था। यह पहला सम्मेलन था जब विकसित और विकासशील देशों के प्रतिनिधियों ने पर्यावरण के मुद्दों पर बात की और मानव के स्वस्थ और उत्पादक वातावरण में रहने के अधिकार को परिभाषित किया। इस सम्मेलन में, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) को अपनाया गया था। यह दुनिया में पर्यावरण आंदोलन की शुरुआत थी और पर्यावरण के मुद्दे न केवल पर्यावरण सम्मेलनों में बल्कि हर अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक बैठक में भी चर्चा का हिस्सा बन गए। 1982 में नैरोबी में इसकी 10वीं वर्षगांठ मनाई गई, इसके बाद 1992 में रियो डी जनेरियो, ब्राजील में पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र पृथ्वी शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया। संयुक्त राष्ट्र सम्मेलनों में सतत विकास पर ध्यान केन्द्रित किया गया। हालाँकि, 1987 में विश्व पर्यावरण और विकास आयोग (WCED) द्वारा प्रकाशित ब्रंटलैंड रिपोर्ट द्वारा सतत विकास शब्द पेश किया गया था। यह एक ऐसी दुनिया के विकास पर ध्यान केंद्रित करता है जहां पर्यावरण परिवर्तन पारिस्थितिक सिद्धांतों के अनुसार हो और प्रत्येक के कल्याण में प्रगति हो।

आयोग की परिभाषा- इसमें वर्तमान और भावी पीढ़ियों के लिए दो महत्वपूर्ण बातें हैं; पर्यावरण की वहन क्षमता पर राज्य द्वारा लागू किए गए प्रतिबंध तथा गरीबों की आवश्यकता।

1992 में पृथ्वी शिखर सम्मेलन के दौरान 21वीं सदी के भावी पर्यावरण पर एक दस्तावेज तैयार किया गया था जिसमें अर्थव्यवस्था, सामाजिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संबंधों को पहचाना गया था। रियो घोषणा, एजेंडा 21 और सतत विकास पर आयोग की स्थापना पृथ्वी शिखर सम्मेलन की प्रमुख उपलब्धियां थीं और इसका उद्देश्य 2000 तक वैश्विक सतत विकास को हासिल करना था। गरीबी पर मुख्य ध्यान देने के साथ इसमें दुनिया की सरकारों के लिए एक गैर-बाध्यकारी निर्देश योजना प्रदान करना था। जिसमें जनसंख्या नीति, स्वास्थ्य, शिक्षा, महिलाओं, युवा, अविकसित देशों, खाद्य सुरक्षा, शुद्ध जल, जल निकायों की सुरक्षा, जहरीले रसायनों और खतरनाक रेडियो धर्मिता से सुरक्षा, उचित भूमि उपयोग और जैव विविधता आदि शामिल हैं। यह महसूस किया गया कि पर्यावरण और सभी मनुष्यों के प्रति हमारे दृष्टिकोण में बदलाव की आवश्यकता है। अगर हम प्रकृति को नष्ट कर रहे हैं तो इसका अर्थ है खुद को नष्ट कर रहे हैं। हमें यह महसूस करना होगा कि प्रत्येक को एक स्वीकार्य जीवन स्तर का अधिकार है परंतु पर्यावरण की कीमत पर नहीं।

टिप्पणी

सतत विकास की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं:

- प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि और आर्थिक विकास को समय के साथ बनाए रखा जाना चाहिए।
- प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग को रोका नहीं जाना चाहिए अपितु इसका उपयोग इस तरह से किया जाना चाहिए कि उनका अत्यधिक दोहन न हो।
- भावी पीढ़ी की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता में कोई कमी नहीं आनी चाहिए।
- सतत विकास उन गतिविधियों को नकारता है जो प्रदूषण को बढ़ाती हैं।
- जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटना एवं लैंगिक समानता और बेहतर स्वास्थ्य का प्रबंधन न करने के तरीके खोजना।

1997 में, न्यूयॉर्क में एक विशेष महासभा का आयोजन किया गया जिसमें एजेंडा 21 के भावी कार्यान्वयन के लिए एक कार्यक्रम अपनाया गया। अंतर्राष्ट्रीय सहमति के माध्यम से, सतत विकास प्राप्त करने के लिए संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2000 में गरीबी उन्मूलन, घातक बीमारियों को रोकने, महिलाओं को सशक्त बनाने और पर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित करने आदि के लिए सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्यों को 2015 तक प्राप्त करने के लिए स्वीकार किया था।

1992 के पृथ्वी शिखर सम्मेलन के बाद सतत विकास पर विश्व शिखर सम्मेलन (WSSD) 2002 में जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ्रीका में आयोजित किया गया था, जिसमें परिणामों और प्रगति की राह की बाधाओं का मूल्यांकन किया गया। इसे रियो+10 के नाम से भी जाना जाता है। यह वैश्विक पर्यावरण, गरीबी की चुनौतियों, एजेंडा 21, MDG और नए मुद्दों जैसे बुनियादी स्वच्छता से वंचित आधी आबादी की जरूरतों को भी संबोधित कर रहा था। पृथ्वी सम्मेलन (WSSD) (2002) में एक कार्यान्वयन योजना को अपनाया गया जिसमें अधिक केंद्रित दृष्टिकोण के साथ लक्ष्य और विकास के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए उठाए जाने वाले ठोस कदमों और कार्यों का उल्लेख है।

सतत विकास के लिए 2030 के एजेंडे के साथ सतत विकास पर जून 2012 में रियो डी जनेरियो में संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के वर्तमान प्रचलित सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्य विकसित किए गए थे। इसे रियो +20 के नाम से भी जाना जाता है। दूसरे शब्दों में, बढ़ती जनसंख्या की जरूरतों को पूरा करने के लिए और साथ ही घटते संसाधनों और उनकी गुणवत्ता की रक्षा के लिए नए लक्ष्यों को जोड़ने के साथ-साथ हमारी भावी पीढ़ियों की जरूरतों को पूरा करने तथा 'ग्रह पृथ्वी' की समृद्धि के प्रति जिम्मेदारी निभाने के लिए सतत विकास लक्ष्यों को सहस्त्राब्दी लक्ष्यों से निरूपित किया गया था।

टिप्पणी

तालिका 24.2 विकास के प्रयास

सम्मेलन	वर्ष	पहल
UNCHE	1972	दुनिया में पर्यावरण आंदोलन की शुरुआत।
हमारा साझा भविष्य	1987	'सतत विकास' शब्द को स्वीकार किया गया।
रियो (एजेंडा 21)	1992	21वीं सदी के भावी पर्यावरण पर दस्तावेज तैयार किया गया।
MDGs	2000	दुनिया के सबसे गरीब लोगों के जीवन में सुधार के लिए आठ लक्ष्यों को अपनाया गया।
रियो+10 (WSSD)	2002	विकास के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए अति केन्द्रित कार्यों की कार्यान्वयन योजना के दृष्टिकोण को अपनाया गया।
रियो + 20	2012	संयुक्त राष्ट्र द्वारा सार्वभौमिक रूप से लागू सत्रह लक्ष्य सभी के (सतत विकास) कल्याण के लिए विकसित किए गए थे।

पाठगत प्रश्न 24.1

1. आर्थिक विकास कब विकास का मुख्य उद्देश्य था?
2. ब्रंटलैंड आयोग की रिपोर्ट किस प्रकार के विकास पर आधारित थी?
3. ग्रो हार्लेम ब्रुन्डलैंड कौन थे?
4. सतत विकास के मुख्य दृष्टिकोण क्या हैं?

24.2 सहस्राब्दि विकास लक्ष्य

सितंबर, 2000 में संयुक्त राष्ट्र सहस्राब्दी शिखर सम्मेलन में 189 देशों के वैश्विक नेताओं की एक सभा द्वारा सहस्राब्दी घोषणा पर हस्ताक्षर किए गए थे, जिसका उद्देश्य एक बेहतर दुनिया और बेहतर कल प्राप्त करना था। सहस्राब्दी विकास लक्ष्य (MDG) इस ऐतिहासिक घोषणा से प्राप्त हुए थे। MDG में, दुनिया के सबसे गरीब लोगों के जीवन में सुधार के लिए कुल आठ लक्ष्य थे। प्रत्येक लक्ष्य के लिए कई माप और संकेतक भी निर्धारित किए गए थे। इन लक्ष्यों को 2015 तक हासिल करने और 1990 के स्तर से आगे की प्रगति को मानीटर करने का लक्ष्य रखा गया। इन लक्ष्यों के माध्यम से, अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ने गरीबी से लड़ने और गरीब समर्थक विकास के दृष्टिकोण को विकसित करने की कोशिश की। गरीबी से लैंगिक समानता, बच्चों और महिलाओं में मृत्यु दर को कम करना और सतत पर्यावरण प्रदान करने के आठ लक्ष्य निम्नलिखित प्रकार से थे–

टिप्पणी

तालिका 24.3 सहस्राब्दी विकास लक्ष्य और लक्ष्य

MDG	लक्ष्य
1. अत्यधिक गरीबी और भुखमरी का उन्मूलन	● प्रति दिन एक डॉलर से कम पर रहने वाले लोगों के अनुपात को आधा करना ● भूख से पीड़ित लोगों के अनुपात को आधा करना
2. सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करना।	● सुनिश्चित करना कि सभी लड़के और लड़कियां प्राथमिक शिक्षा का पूरा पाठ्यक्रम पूरा करें
3. लैंगिक समानता को बढ़ावा देना और महिलाओं को सशक्त बनाना	● प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा में 2005 तक और 2015 तक सभी स्तरों पर लैंगिक असमानता को समाप्त करना
4. शिशु मृत्यु दर में कमी लाना।	● पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु दर को दो तिहाई कम करना
5. मातृ स्वास्थ्य में सुधार।	● मातृ मृत्यु दर को तीन चौथाई कम करना।
6. एचआईवी/एड्स, मलेरिया अन्य बीमारियों का मुकाबला करना।	● एचआईवी/एड्स के प्रसार को रोकना ● अन्य प्रमुख बीमारियों की घटनाओं को रोकना
7. विकास के लिए वैश्विक साझेदारी विकसित करना।	● निजी क्षेत्र के सहयोग से नई तकनीकों का लाभ उपलब्ध कराना। ● विशेषकर सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से

पंद्रह वर्षों की अवधि में, MDG ने कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों में प्रगति की है जैसे आय की निर्धनता को कम करना, जल और स्वच्छता तक पहुंच प्रदान करना, मृत्यु दर में कमी करना और मातृ स्वास्थ्य में भारी सुधार करना। इसने मुफ्त प्राथमिक शिक्षा के लिए एक वैश्विक आंदोलन भी शुरू किया, जो देशों को अपनी भावी पीढ़ियों में निवेश करने के लिए प्रेरित करता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि MDG ने एचआईवी/एड्स और मलेरिया और तपेदिक जैसी बीमारियों से निपटने में भारी प्रगति की है।

MDG की मुख्य उपलब्धियां

- लक्ष्य 1 के तहत, अत्यधिक गरीबी को 1990 के स्तर से काफी कम कर दिया गया है जब 50 प्रतिशत लोग प्रतिदिन 1.25 डॉलर से कम पर रहते थे और 2015 में यह संख्या घटकर 14 प्रतिशत रह गयी। 1990 के बाद से अब तक एक अरब से अधिक लोगों को अत्यधिक गरीबी से बाहर निकाला गया है।

टिप्पणी

- विकासशील क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा और नामांकन में सुधार हुआ है। विशेष रूप से सब-सहारा अफ्रीका इस पहल के बाद प्राथमिक शिक्षा में सुधार का सबसे अच्छा उदाहरण है। शुद्ध नामांकन में 2000 से 2015 तक लगभग 20% की वृद्धि देखी गई। 1990 के बाद से प्राथमिक स्कूल में स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या में भी भारी कमी आई है।
- 1990 और 2015 के बीच बाल मृत्यु दर आधे से अधिक घट गई है। पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु की संख्या 12.7 मिलियन (1990) से घटकर 6 मिलियन (2015) हो गई है। सब-सहारा अफ्रीका क्षेत्र में 2005-2013 के दौरान मृत्यु दर में कमी की वार्षिक दर पांच गुना से भी अधिक तेज थी।
- 2000 के बाद से वैश्विक स्तर पर मातृ मृत्यु दर में लगभग 45% की गिरावट दर्ज की गई है। दक्षिणी एशिया में इसमें 64% और उप-सहारा अफ्रीका में 49% की गिरावट आई।
- एचआईवी/एड्स संक्रमण लगभग 40 प्रतिशत (2000 से) तक कम हो गया।
- बेहतर पेयजल तक पहुंच जैसी सेवाओं में पाइप से पीने के जल की पहुंच में भी दुनिया भर में सुधार हुआ है। लगभग 147 देशों ने पीने के जल का लक्ष्य पूरा कर लिया गया है, 95 देशों ने स्वच्छता का लक्ष्य पूरा कर लिया है और 77 देशों ने दोनों लक्ष्यों को पूरा कर लिया है। आधी से अधिक वैश्विक आबादी उच्च स्तर की सेवाओं का आनंद ले रही है।
- विकसित देशों से सहायता और विकासशील देशों से शुल्क मुक्त आयात में 2000 के बाद से वृद्धि हुई है। दुनिया की लगभग 95% आबादी मोबाइल सिग्नल से आच्छादित है और दुनिया की आबादी के लिए इंटरनेट सेवा में बहुत बड़ी वृद्धि 2000 में केवल 6% से 2015 में 43% हो गई है। इसके कारण 32 अरब लोग वैश्विक नेटवर्क के माध्यम से सामग्री और अनुप्रयोगों के लिए जुड़े हुए हैं।

भारत ने गरीबी भुखमरी में कमी प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक शिक्षा में नामांकन में लैंगिक समानता, मातृ मृत्यु दर, तपेदिक जैसी बीमारी पर नियंत्रण, वन क्षेत्र में वृद्धि आदि के लक्ष्यों को प्राप्त किया है। इसके अलावा स्वच्छ पेयजल तक पहुंच बनाने ग्रीनहाउस गैसों में उत्सर्जन को नियंत्रित करने की स्थिति में सुधार हुआ है लेकिन फिर भी बड़ी चुनौतियां बनी हुई हैं।

पाठगत प्रश्न 24.2

1. सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों को कब अपनाया गया था?
2. MDG में प्रगति को मापने का आधार वर्ष क्या था?
3. MDG में सफल रहने वाले तीन सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र कौन से थे?
4. MDG के किन लक्ष्यों में भारत ने निश्चित लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया है?

टिप्पणी

24.3 सतत विकास लक्ष्य

सतत विकास शब्द का पहली बार प्रयोग विश्व संरक्षण रणनीति (WCS) में 1980 में इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचुरल रिसोर्सेज (IUCN) में किया गया था। लेकिन इस अवधारणा को 1983 में विश्व पर्यावरण आयोग द्वारा स्पष्ट किया गया। विश्व पर्यावरण विकास आयोग ने (WCED) ग्रो हार्लेम ब्रुन्डलैंड को आयोग के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया और उसकी रिपोर्ट को ब्रुंडलैंड आयोग की रिपोर्ट के रूप में जाना जाता था। रिपोर्ट में, मानव गतिविधियों और ग्रह पृथ्वी पर विकास के नकारात्मक प्रभावों के बारे में भी कई चिंताओं को उठाया गया है और यह भी रेखांकित किया गया है कि यदि उन्हें नियंत्रित नहीं किया गया, तो भविष्य अस्थिर होगा।

स्थिर दृष्टिकोण के साथ विकास की संकल्पना आर्थिक विकास, सामाजिक समानता और पर्यावरण संरक्षण के साथ बहुत अधिक जुड़ी हुई है। इसके अलावा, सतत विकास का गहरा अर्थ है। उदाहरण के लिए, एक स्थिर स्थिति में, लोगों के पास रोजगार के अधिक अवसर हो सकते हैं; हर कोई पौष्टिक भोजन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सामाजिक और लैंगिक समानता और मानवाधिकारों का खर्च उठा सकता है। कुल मिलाकर, यह सब की सामाजिक स्थिति और कल्याण को बेहतर करने के बारे में है। यह एक जन-केंद्रित पहल है।

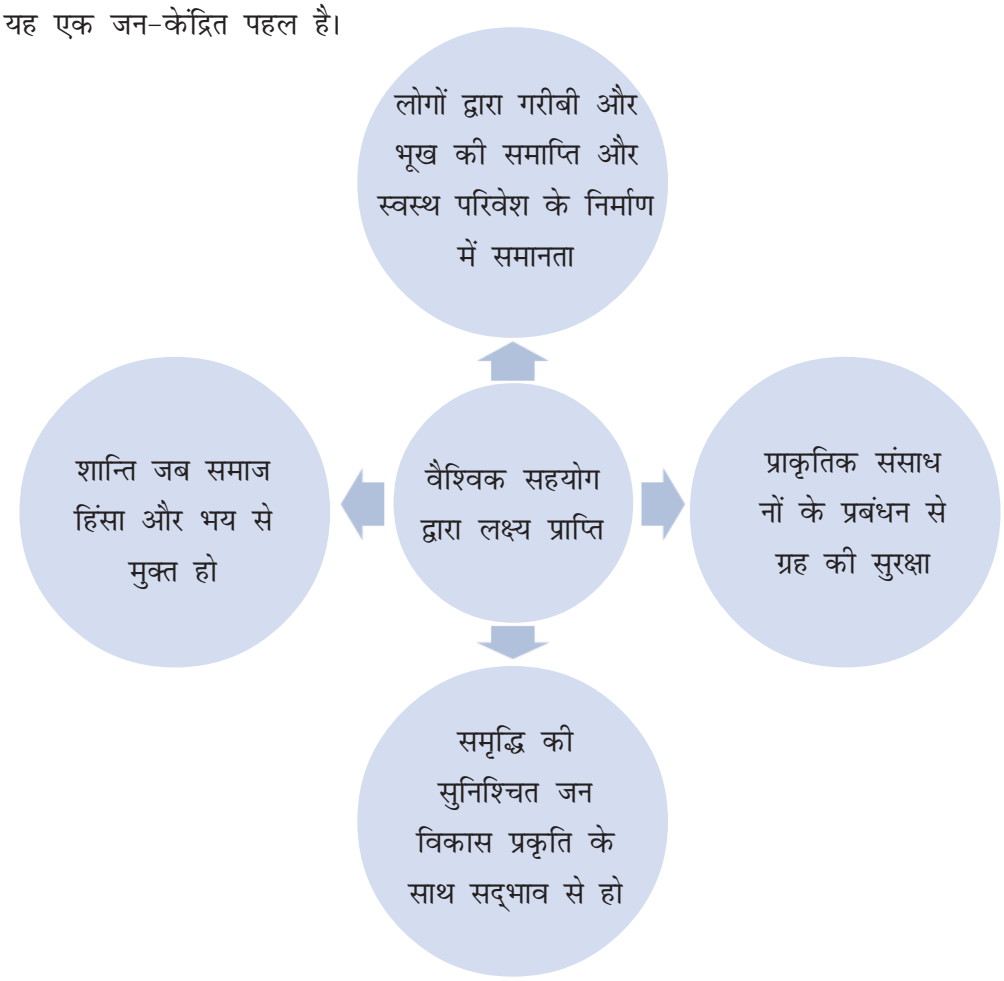

चित्र 24.1 सतत विकास के 5P

टिप्पणी

SDG, 25 सितंबर, 2015 को आयोजित संयुक्त राष्ट्र महासभा के 70वें सत्र में 193 देशों के विश्व नेताओं द्वारा अपनाए गए 17 सार्वभौमिक लक्ष्यों पर किए गए समझौतों का एक समूह है। जिसको 'हमारी दुनिया को बदलना: सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा' का नाम दिया गया। 2030 का यह एजेंडा सतत विकास या हमारे इच्छित भविष्य की ओर ले जाने वाला है। यह जनवरी 2016 में लागू किया गया। यह MDG के बाद आया। संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों द्वारा स्वीकृत SDG लोगों और पृथ्वी के लिए शांति और समृद्धि का खाका प्रदान करते हैं। सभी 5P सतत विकास में साझेदारी द्वारा शामिल हैं। (चित्र 1)। इस समझौते का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य गरीबी को समाप्त करना और वृद्धि और विकास के कई पहलुओं पर काम करना है। यह वैश्विक साझेदारी के तरीके से सभी विकसित और विकासशील देशों द्वारा कार्रवाई की दिशा में एक जरूरी कदम है। SDG कुछ नए उद्देश्यों के साथ MDG का संश्लेषण या एकीकरण है। SDG इस मायने में अद्वितीय हैं कि वे उन मुद्दों को कवर करते हैं जो हम सब को प्रभावित करते हैं। गरीबी को समाप्त करने के लिए वे हमारी अंतरराष्ट्रीय प्रतिबद्धता का उल्लेख करते हैं। तालिका 2, बढ़ती गरीबी से निपटने, महिलाओं को सशक्त बनाने और जलवायु की आकस्मिक स्थिति को संबोधित करने के तथा कार्रवाई के लिए फोकस लक्ष्यों के साथ सभी उद्देश्यों को दर्शाती है। इसके अलावा, यह भी माना जाता है कि गरीबी और भुखमरी को समाप्त करने और अन्य लक्ष्यों जैसे असमानता, आर्थिक विकास, स्वास्थ्य और शिक्षा में सुधार, जलवायु परिवर्तन, भूमि और महासागरों के संरक्षण के लिए मजबूत नीति और रणनीतियों के साथ मजबूती से चलना चाहिए।

तालिका 24.4 : सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) के उद्देश्य

सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी)	**उद्देश्य**
गरीबी उन्मूलन	गरीबी का उसके सभी रूपों में अंत
शून्य भूख	भुखमरी समाप्त करना, खाद्य सुरक्षा प्राप्त करना, पोषण में सुधार करना और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देना।
अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण	लैंगिक समानता हासिल करना और सभी महिलाओं और लड़कियों को सशक्त बनाना
गुणवत्तापूर्ण शिक्षा	समावेशी और समान गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करना और सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना।
लैंगिक समानता	लैंगिक समानता हासिल करना और सभी महिलाओं और लड़कियों को सशक्त बनाना
स्वच्छ जल और स्वच्छता	जल की उपलब्धता सतत प्रबंधन सुनिश्चित करना तथा सभी के लिए स्वच्छता सुनिश्चित करना

टिप्पणी

सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा	सभी के लिए जल और स्वच्छता की उपलब्धता और सतत प्रबंधन सुनिश्चित करना
अच्छा काम और आर्थिक विकास	समावेशी और सतत आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा देना, विकास और उत्पादक रोजगार और सभी के लिए अच्छा काम उपलब्ध करवाना
उद्योग, नवाचार और बुनियादी ढांचा	समावेशी लचीला और बुनियादी ढांचा निर्मित करना तथा टिकाऊ औद्योगीकरण और नवाचार को बढ़ावा देना
असमानता को कम करना	देशों के भीतर और देशों के बीच असमानता को कम करना
टिकाऊ शहर और समुदाय	शहरों और मानव बस्तियों को समावेशी, सुरक्षित, लचीला और टिकाऊ बनाना
उत्तरदायी खपत और उत्पादन	टिकाऊ खपत और उत्पादन का पैटर्न सुनिश्चित करना
जलवायु	जलवायु परिवर्तन और इसके प्रभावों से लड़ने के लिए तत्काल कार्रवाई करना
जल में जीवन	सतत विकास के लिए महासागरों, समुद्रों और समुद्री संसाधनों का संरक्षण और सतत उपयोग
भूमि पर जीवन	स्थलीय पारिस्थितिक तंत्र के सतत उपयोग को सुरक्षित, पुनर्स्थापित और बढ़ावा देना, वनों का स्थायी प्रबंधन, मरुस्थलीकरण का मुकाबला करना और भूमि क्षरण को रोकना एवं जैव विविधता की हानि को रोकना
शांति, न्याय और मजबूत संस्थान	सतत विकास के लिए शांतिपूर्ण और समावेशी समाज को बढ़ावा देना, सभी के लिए न्याय तक पहुंच प्रदान करना और सभी स्तरों पर प्रभावी, जवाबदेह और समावेशी संस्थानों का निर्माण करना
लक्ष्यों के लिए साझेदारी	सतत विकास के कार्यान्वयन के लिए साधनों को मजबूत करना और वैश्विक साझेदारी को पुनः शक्तिशाली बनाना

सतत विकास लक्ष्यों के स्तंभ

सत्रह लक्ष्यों से ऊपर, अब एक स्थिर दुनिया के निर्माण पर ध्यान केन्द्रित है। सभी SDG के मूल को चार स्तंभों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है जैसे मानव, सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरण। सभी लक्ष्य इन स्तंभों के इर्द-गिर्द घूमते हैं और दूसरे शब्दों में एस.डी.जी. मानव सभ्यता और उसके पर्यावरण की स्थिरता के लिए इन स्तंभों के माध्यम से एक स्थिर दुनिया के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

टिप्पणी

- **मानव स्थिरता:** मानव विकास SDG का मूल है और अधिकांश लक्ष्य, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से इससे संबंधित हैं। मानव स्थिरता को बनाए रखने के लिए मानव पूंजी में सुधार करने की आवश्यकता है। इसलिए गरीबी खत्म करने और भुखमरी दूर करने के लिए गरीबी उन्मूलन में निवेश करने की जरूरत है। इस निवेश के अतिरिक्त स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र, स्वास्थ्य में सुधार, सभी के लिए आर्थिक भलाई को पूरा करने के लिए सेवाओं तक पहुंच, पोषण और ज्ञान और कौशल वृद्धि के क्षेत्र में भी निवेश की आवश्यकता है। अच्छे स्वास्थ्य और तंदुरूस्ती को बनाए रखने के लिए सभी देशों में नवजात शिशुओं और 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु को समाप्त करना, कौशल और क्षमता निर्माण के माध्यम से एड्स, तपेदिक, मलेरिया, जलजनित एवं अन्य संचारी रोगों आदि की महामारी को समाप्त करना है। हम कौशलों के विकास एवं क्षमता निर्माण द्वारा समुदायों और समाज की भलाई को बढ़ावा दे सकते हैं।

- **सामाजिक स्थिरता:** यह किसी समुदाय की संस्कृति, सामंजस्य और ईमानदारी जैसी सामाजिक गुणवत्ता को बनाए रखने की क्षमता है जो केवल वर्तमान आवश्यकता के लिए नहीं अपितु भविष्य की पीढ़ियों के पक्ष एवं भलाई के लिए आवश्यक है। सामाजिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए सामाजिक ढांचे में निर्माण करने वाली सेवाओं में निवेश करके सामाजिक पूंजी में सुधार करना भी एक लक्ष्य है। सामाजिक रूप से सफल बनाने, स्वस्थ और रहने योग्य समुदायों के लिए, राष्ट्रवार सामाजिक सुरक्षा प्रणाली पर ध्यान केंद्रित करने, विशेष रूप से गरीबों को संसाधनों पर समान अधिकार देने लैंगिक समानता, वंचित समूह को सशक्त बनाने, सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने तथा लोकतांत्रिक और अच्छी गुणवत्ता वाला जीवन प्रदान करने की आवश्यकता है।

- **आर्थिक स्थिरता:** आर्थिक स्थिरता का मुख्य उद्देश्य जीवन स्तर में सुधार है। आर्थिक विकास के बिना, हम सतत विकास हासिल नहीं कर सकते। विकास की गुणवत्ता और मात्रा दोनों महत्वपूर्ण हैं लेकिन यह पारिस्थितिकी और मानव पूंजी को नुकसान पहुंचाए बिना होना चाहिए। यह उन व्यवहारों के बारे में है जो हमारे समुदाय के सामाजिक-सांस्कृतिक और पर्यावरणीय पहलुओं को नुकसान पहुंचाए बिना भविष्य के लिए आर्थिक विकास का समर्थन करते हैं।

- **पर्यावरणीय स्थिरता:** यह स्थिरता का सबसे महत्वपूर्ण और आवश्यक स्तंभ है। प्राकृतिक पूंजी जैसे वायु, जल, भूमि और प्राकृतिक संसाधनों आदि के संरक्षण के माध्यम से पर्यावरणीय स्थिरता प्राप्त करने के लक्ष्य को प्राप्त किए बिना हम अन्य स्तम्भों के लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकते। उदाहरण के लिए प्राकृतिक संसाधनों को क्षति पहुंचाए बिना हम कृषि उत्पादों की आपूर्ति का विस्तार कर सकते हैं जिसके लिए हमें कृषि उत्पादकता को संरक्षित करने वाले कृषि के तरीकों को अपनाना तथा मृदा, भूमि जल और भूमि पर प्रवाहित जल में प्रदूषण को न्यूनतम करना होगा।

टिप्पणी

पाठ आधारित प्रश्न 24.3

i. सतत विकास लक्ष्यों को किस सत्र में अपनाया गया था?

ii. सतत विकास में महत्वपूर्ण पी कौन-से हैं?

iii. भारत में कौन-सा सरकारी निकाय SDG के बीच समन्वय स्थापित कर रहा है?

24.4 MDG और SDG के बीच अंतर और दोनों का महत्व

SDG को MDG के अधूरे एजेंडे को आगे बढ़ाने एवं MDG का विस्तारित रूप कहा जा सकता है और इसमें हमारी वर्तमान पीढ़ी के सामने आने वाली पर्यावरणीय, राजनीतिक और आर्थिक चुनौतियों को दूर करने के लिए निरंतरता भी है। लक्ष्यों का उद्देश्य दुनिया के सबसे गरीब और अल्प-विकसित देशों सब-सहारा देशों, लैटिन अमेरिकी देशों आदि में सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय स्थितियों में सुधार करके विकास को प्रोत्साहित करना है। उन्हें 15 साल की अवधि वाले दीर्घकालिक लक्ष्यों के रूप में वर्गीकृत किया गया है। MDG 2015 में पूरे किए गए जबकि SDG हासिल करने का लक्ष्य 2030 होगा।

तालिका 24.5: MDG और SDG के बीच अंतर

मानदंड	MDG	SDG
उद्देश्य	विकास को बढ़ावा देना	स्थिरता और विकास दोनों को प्राप्त करना
उद्भव	MDG संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय से विशेषज्ञों के एक समूह ने तैयार किए थे।	SDG 70 खुले कार्य समूहों, नागरिक संगठनों, विषयागत परामर्श, आमने-सामने बैठकर आम जनता की भागीदारी और ऑनलाइन तंत्र तथा 'डोर टू डोर' सर्वेक्षण सहित एक लंबे और व्यापक परामर्श के बाद विकसित हुए।
विकास लक्ष्यों की संख्या	MDG केवल 8 लक्ष्यों, 21 लक्ष्यों और 63 संकेतकों पर केंद्रित थे।	169 लक्ष्यों के साथ 17 लक्ष्य शामिल हैं, यह काफी व्यापक हैं।

टिप्पणी

अनुदान	SDG के मामले में सभी देश इसके फोकस में हैं और विभिन्न वैश्विक एजेंसियों और देशों के माध्यम से इनके लिए धन उपलब्ध कराया जाता है।	जैसा MDG ने विकासशील देशों पर अधिक ध्यान केंद्रित किया, जबकि उन्होंने यह मान लिया था कि फंडिंग अमीर देशों के माध्यम ओर से आएगी जो नहीं हुआ।
लक्ष्य प्राप्त करने की समयावधि	MDG को 2000 में अपनाया गया और इसका आधार वर्ष 1990 था जिसे 2015 में पूरा किया गया।	SDG ने वास्तविक समय के आंकड़ों पर अधिक जोर दिया है और 2015 से आधार रेखा अनुमानित की गई ताकि इन लक्ष्यों की ओर प्रगति को आयु, लिंग, शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रवास के स्तर तथा पूरी जनसंख्या के स्तर पर समझा जा के। 15 वर्ष के एस.डी.जी. ने 2030 में यह लक्ष्य प्राप्त होंगे।
निर्धारित समय-सीमा	2000-2015	2015-2030
लक्ष्यों की प्रकृति	सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों के समय जेंडर, लोगों की भागीदारी और स्थानीय शासन को गरीबी की तुलना में महत्वपूर्ण नहीं माना जाता था।	लिंग और पर्यावरणीय गरिमा पर जोर देने के साथ लक्ष्य अधिक उदार और व्यापक हैं। यह भी स्पष्ट है कि एसडीजी हमारे सामाजिक जीवन स्थितियों के सूक्ष्म पहलू को ध्यान में रखते हैं।
हितधारक	यह देखा गया कि अल्पतम विकसित देश (LDC) फोकस में थे क्योंकि उनसे कार्रवाई करने का आग्रह किया गया था और नागरिक संगठन या स्थानीय समाज की कोई भूमिका नहीं थी	एसडीजी में सभी राष्ट्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे कार्य करें और संकट का मुकाबला करें प्रतिक्रिया दें और मांग करें कि स्थानीय स्वशासन को कार्यात्मक बनाया जाए।
निजी क्षेत्र की भूमिका	एसडीजी अंतर सरकारी सहयोग और कार्यों में अधिक निहित थे।	विकास प्रक्रिया में निजी खिलाड़ियों की भूमिका के बारे में एसडीजी अधिक स्पष्ट और स्वागत योग्य हैं। इसमें स्थायी विकास प्राप्त करने के लिए निजी क्षेत्र के साथ एक जीवंत और व्यवस्थित साझेदारी बनाने की दृष्टि शामिल है।

टिप्पणी

लक्ष्यों की दोनों श्रेणियों को वैश्विक लक्ष्यों के रूप में जाना जाता है और लागू किया जाता है, लक्ष्य के साथ लक्ष्यों के साथ और मापने योग्य परिणामों के संकेतकों के माध्यम से विस्तृत किया जाता है जो कार्रवाई उन्मुख होते हैं।

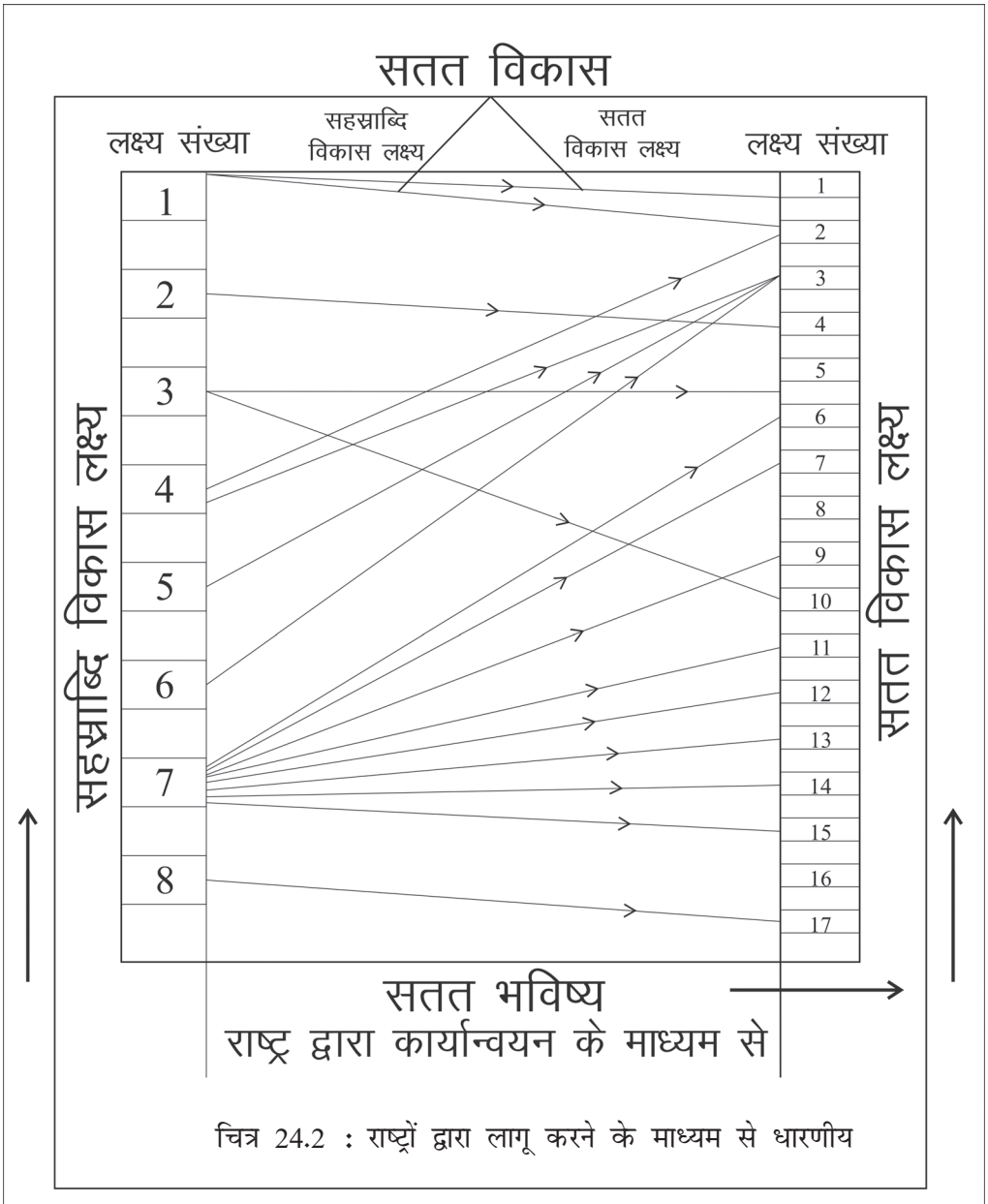

चित्र 24.2 : राष्ट्रों द्वारा लागू करने के माध्यम से धारणीय

एसडीजी के साथ बाधाएं

एकमात्र और सबसे महत्वपूर्ण विफलता यह है कि दुनिया भर में इन लक्ष्यों की उपलब्धियों को अनुभव नहीं किया गया। दक्षिणपूर्वी एशिया, दक्षिणी एशिया और उत्तरी एशिया जैसे कुछ क्षेत्रों में गरीबी में कमी के लक्ष्य को क्रमशः 16%, 12.5% और 1.2% तक बढ़ा दिया। एमडीजी के लक्ष्यों को पूरा करने में सब-सहारा क्षेत्र सबसे पीछे रहा।

टिप्पणी

सतत विकास केवल एक पर्यावरणीय मुद्दा बना हुआ है और यह केवल एजेंडा के लिए प्रतिस्पर्धा करता रहा है। सभी प्रजातियों की वैश्विक जैव विविधता में कमी आ रही है, विकसित देशों ने विकासशील देशों के प्रति प्रतिबद्धता को पूरा नहीं किया। मानव विकास के प्रभाव के कारण पानी, जैव विविधता, फाइबर और भोजन जैसी कई महत्वपूर्ण पारिस्थितिक तंत्र सेवाओं से समझौता किया जा रहा है, दुनिया के कई देश और विगत 2 दशकों में पीने के पानी की कमी देखी गई है। कई देशों में अमीरों और गरीबों की आय में असमानता भी देखी गई है। वह सब विकास के एजेंडा की विफलताओं को इंगित करता है।

24.5 एसडीजी में भारत का दृष्टिकोण और स्थिति

वैश्विक सतत विकास के 169 लक्ष्यों के साथ 17 लक्ष्य भारत के राष्ट्रीय विकास एजेंडे का एक मुख्य हिस्सा हैं। भारत उच्च आर्थिक विकास हासिल करने, सतत विकास को सुव्यवस्थित करने और मानव कल्याण को प्राथमिकता दे रहा है। हमारा विकास गरीबी, स्वास्थ्य, पोषण, सतत विकास, लैंगिक समानता, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वच्छ पानी और पर्यावरण जैसे अन्य मुद्दों पर केंद्रित है; जो मानव अस्तित्व के लिए आवश्यक मुद्दे हैं। नीति (नेशनल इंस्टीट्यूशन फॉर ट्रांसफॉर्मिंग इंडिया) आयोग भारत सरकार का प्रमुख निकाय है जो प्रत्येक लक्ष्य से जुड़े मंत्रालय के साथ सतत विकास लक्ष्यों का समन्वय कर रहा है। विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों के साथ एसडीजी के लक्ष्यों की व्यापक मैपिंग विकसित की गई है ताकि यह आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय स्तंभों को उनके अंतर-संबंधों के साथ एक साथ ला सके। वैश्विक सहमति लक्ष्यों और लक्ष्यों के आधार पर, नीति आयोग ने सभी हितधारकों के साथ परामर्श करने और केंद्रीय मंत्रालयों, राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों, नागरिक संगठनों, शिक्षाविदों, व्यापार क्षेत्र और भारत के एसडीजी के सूचकांक की गणना करने के लिए प्राथमिकता संकेतकों का चयन किया है।

एसडीजी एजेंडे पर भारत की प्रगति में राज्य और स्थानीय सरकारों की प्रमुख भूमिका है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, स्वच्छ भारत अभियान, सर्वशिक्षा अभियान, स्कूल में मध्याह्न भोजन का राष्ट्रीय कार्यक्रम, राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल कार्यक्रम, प्रधानमंत्री आवास योजना, सबका साथ सबका विकास, राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन और डिजिटल इंडिया आदि के कार्यान्वयन में उनकी विशिष्ट भूमिका है ताकि कोई भी पीछे न रहे। एसडीजी इंडिया इंडेक्स के अनुसार राज्य / केंद्रशासित प्रदेशों को 4 श्रेणियों में विभाजित किया गया है: एस्पायरेंट (0-49), परफॉर्मर (50-64), फ्रंट रनर (65-99) और अचीवर (100)।

चित्र 24.3 : एमडीजी और एसडीजी

एसडीजी एजेंडे की दिशा में लगभग एक-तिहाई यात्रा पहले ही हासिल की जा चुकी है। स्वास्थ्य, ऊर्जा और बुनियादी ढांचे जैसे क्षेत्रों में एसडीजी के लक्ष्यों में देश ने पर्याप्त प्रगति दिखाई है। एसडीजी इंडेक्स का समग्र स्कोर देश में साफ पानी और स्वच्छता और सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा में सुधार के कारण काफी हद तक बढ़ा और आगे बढ़ा है। नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, जिसमें राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के बीच साझेदारी की भूमिका और महत्व पर प्रकाश डाला गया है, यह पाया गया है कि 15 राज्य/केंद्र शासित प्रदेश प्रदर्शनकर्ता श्रेणी में हैं और 22 राज्य/केंद्र शासित प्रदेश अग्रणी श्रेणी में हैं। गरीबी और भुखमरी के उन्मूलन जैसे क्षेत्रों में सूचकांक में सुधार दिखता है जबकि घरों में बिजली और स्वच्छ खाना पकाने के ईंधन की पहुंच में सुधार के अभियान महत्वपूर्ण कारक रहे हैं। दूसरी तरफ, एसडीजी इंडिया इंडेक्स में जिस क्षेत्र में गिरावट देखी गई, वह उद्योग, नवाचार और बुनियादी ढांचा है, जो सरकारों द्वारा लागू किए गए लॉकडाउन के कारण हुआ है।

राज्यवार समग्र विश्लेषण यह दर्शाता है कि, केरल ने भूख से निपटने के प्रयास (लक्ष्य 2) और छात्रों की शिक्षा की गुणवत्ता प्रदान करने के लिए (लक्ष्य 4) में सुधार के कारण सूचकांक में उच्चतम स्कोर को (75) हासिल किया है, इसके बाद हिमाचल और तमिलनाडु को 74 अंकों के दूसरा स्थान है (चित्र 2)। केंद्रशासित प्रदेशों में चंडीगढ़ ने शीर्ष स्कोर (79) हासिल किया है, उसके बाद दिल्ली (68) का स्थान है। क्षेत्रीय विश्लेषण के संदर्भ में, दक्षिण-पश्चिमी और उत्तर-मध्य राज्यों के बीच प्रदर्शन में महत्वपूर्ण अंतर रहा है जो सामाजिक-आर्थिक और शासन के बीच की खाई को इंगित करता है।

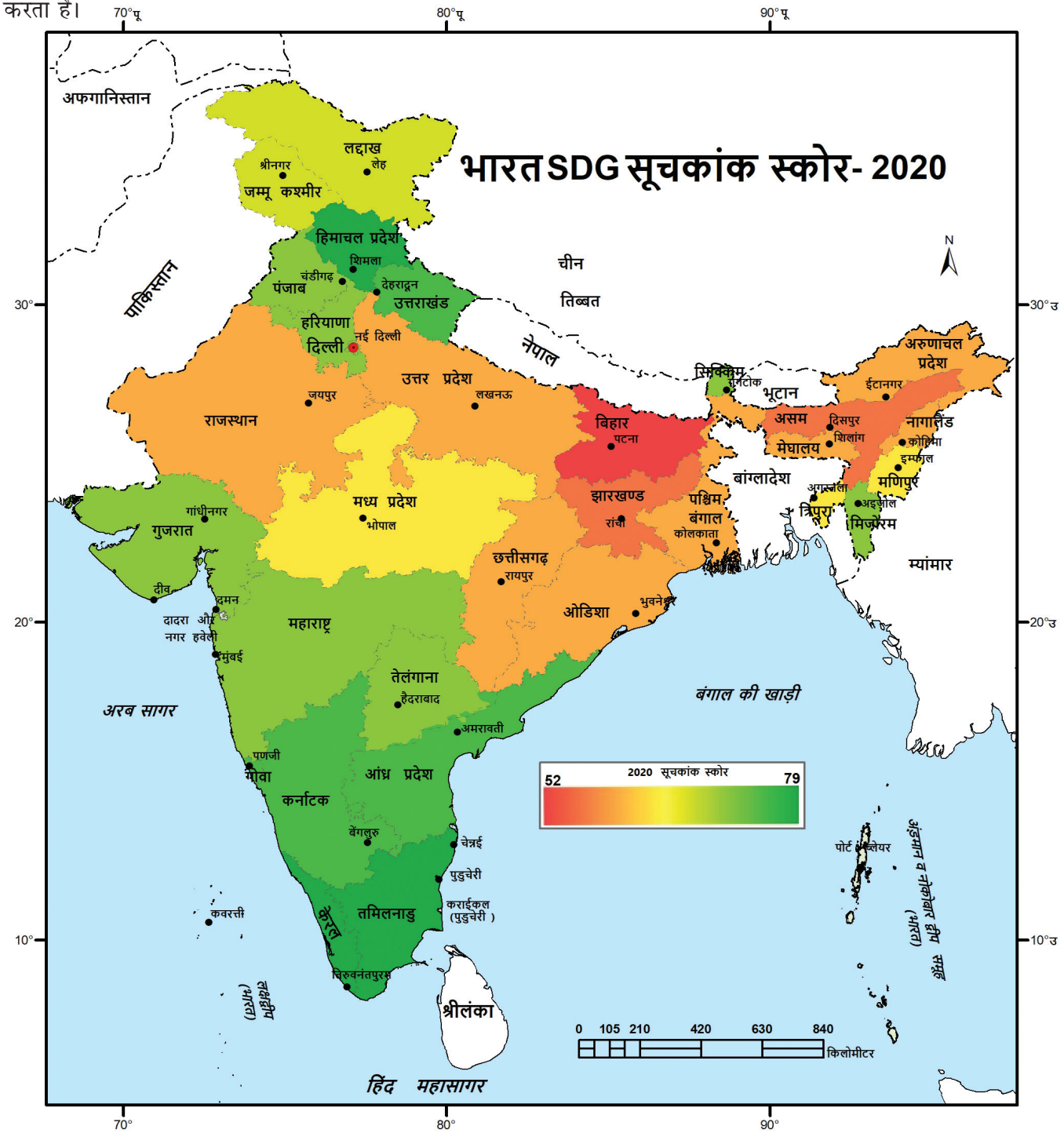

चित्र 24.4 : भारतः एसडीजी सूचकांक 2020

टिप्पणी

वित्त की कमी, जनसंख्या वृद्धि, हाल ही की कोविड महामारी, और संसाधनों की खपत के प्रति व्यवहार के कारण भारत में सतत विकास को प्राप्त करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा हैं। उदाहरण के लिए, भारत के पास एसडीजी लक्ष्यों के कार्यान्वयन के लिए आवश्यक धन का केवल 5 प्रतिशत उपलब्ध है, जो स्वास्थ्य (1.5%) और शिक्षा (4%) जैसे आवश्यक क्षेत्रों के लिए बहुत ही महत्वहीन है और आवश्यकता से बहुत कम है। भारतीय राज्यों को असमानता और गरीबी कम करने जैसी चिंताओं पर अपने प्रदर्शन में सुधार करने की जरूरत है। लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए भूख, पर्यावरण में सुधार आदि भी आवश्यक हैं।

सभी एसडीजी लक्ष्य आपस में जुड़े हुए हैं, यदि हम एक में सफल होते हैं तो दूसरे लक्ष्यों में भी सफलता प्राप्त होती है। एसडीजी वैश्विक चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए अच्छी तरह से तैयार की गई योजनाएं हैं, जो गरीबी, असमानता, स्वास्थ्य के मुद्दों, स्वच्छता, लैंगिक मुद्दों, जलवायु परिवर्तन, पर्यावरणीय गिरावट, असमानता, गरीबी, शांति और न्याय आदि से निपटने के लिए हैं। एसडीजी इसलिए असाधारण हैं क्योंकि वे उन मुद्दों को कवर करते हैं जो हम सभी को प्रभावित करते हैं। संक्षेप में, यह आगामी पीढ़ियों के जीवन को बेहतर बनाने की पहल है।

पाठगत प्रश्न 24.4

1. एमडीजी को पूरा करने की समय अवधि क्या थी?
2. एसडीजी का मुख्य उद्देश्य क्या हैं?
3. एसडीजी में कितने लक्ष्य हैं?
4. एसडीजी के लक्ष्यों को कब तक पूरा कर लिया जाएगा?
5. भारत के SDG इंडेक्स में किन राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों का स्कोर सबसे अधिक है?

टिप्पणी

आपने क्या सीखा

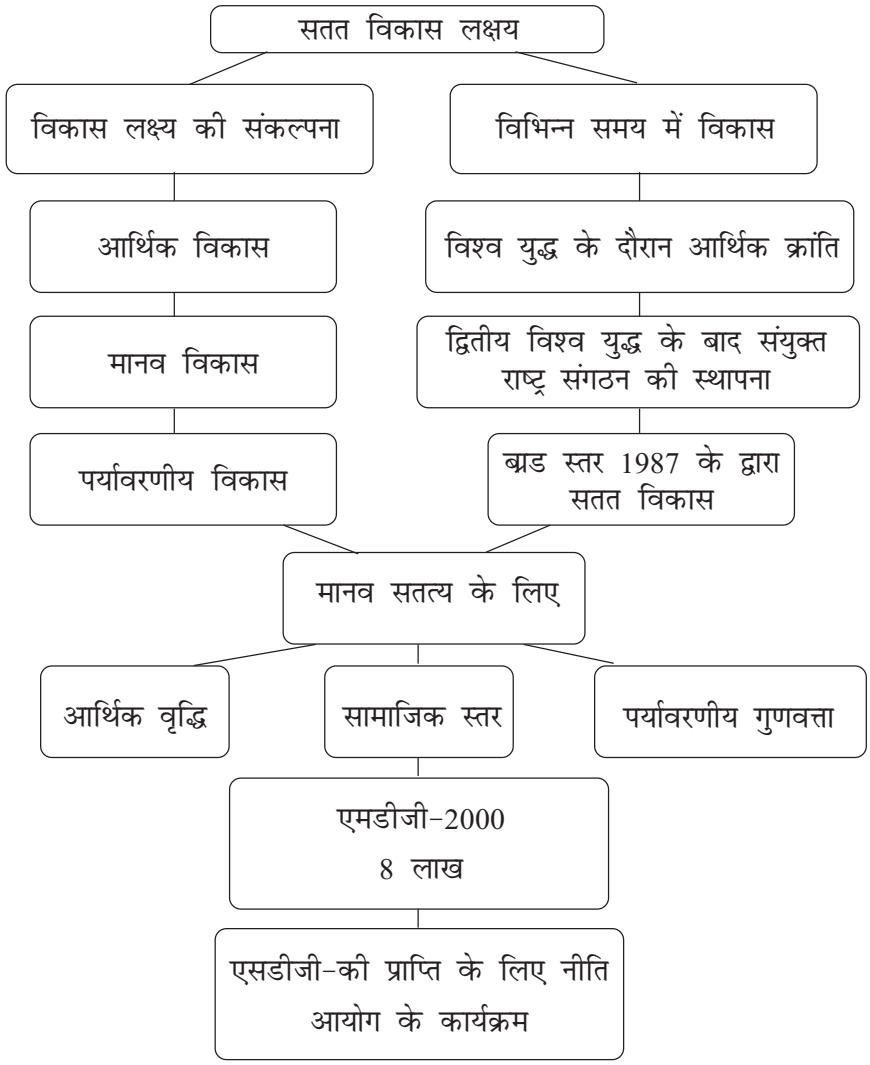

पाठांत प्रश्न

1. सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्यों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
2. एमडीजी की प्रमुख उपलब्धियां क्या हैं?
3. संपोषणीय विकास के लक्ष्यों को उनके लक्ष्यों सहित संक्षेप में वर्णन कीजिए।
4. नीति आयोग क्या है और एसडीजी में इसकी क्या भूमिका है।
5. धारणीय विकास के स्तंभों की व्याख्या कीजिए।
6. भारत में सतत विकास लक्ष्यों की प्रगति का वर्णन कीजिए।

टिप्पणी

7. एमडीजी और एसडीजी के बीच अंतर कीजिए।

गतिविधि:

विकसित और विकासशील देशों के बीच विकास के अन्तर में कारणों की सूची बनाइए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

24.1

1. द्वितीय विश्व युद्ध से पहले।
2. सतत विकास।
3. ग्रो हार्लेम बुन्डलैंड पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग के अध्यक्ष थे।
4. आर्थिक विकास, सामाजिक समानता और पर्यावरण संरक्षण।

24.2

1. सितंबर 2000 में।
2. 1990
3. अत्यधिक गरीबी, प्राथमिक शिक्षा और बाल मृत्यु दर।
4. गरीबी में कमी, प्राथमिक शिक्षा और मातृ स्वास्थ्य में नामांकन।

24.3

1. संयुक्त राष्ट्र संघ का 70वां सत्र।
2. लोग, ग्रह, शांति, समृद्धि और साझेदारी।
3. नीति आयोग।

24.4

1. 2000-2015
2. स्थिरता और विकास दोनों को प्राप्त करने के लिए।
3. 17 लक्ष्य और 169 लक्ष्य
4. 2030 तक।
5. केरल।